International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 28-06-2023, Accepted: 13-07-2023, Published: 29-07-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 39-40

भारत–आसियान सम्बन्धः वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाएँ

डॉ. अखिलेश पाल[1], मनोज कुमार[2]

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

आसियान की स्थापना 1967 में हुई। अपनी स्थापना के प्रारम्भ में यह पाँच देशों का संगठन था। वर्तमान में आसियान दस सदस्य राष्ट्रों का संगठन है। आसियान दक्षिण–पूर्वी एशिया में एक विशेष स्थान रखता है। यह एक भौगोलिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा धार्मिक विविधता वाला क्षेत्र है। भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के राष्ट्रों का लम्बा सांस्कृतिक इतिहास रहा है, जिसने सदियों से उनके बीच आर्थिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों को आकार देने में मदद की है। भारत के 1990 के दशक के 'लुक ईस्ट पॉलिसी' के लाँच के बाद इस साझेदारी को और गतिशील बनाया, जिसे 2015 में 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के साथ जोड़ा गया। भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी केवल एक बाहरी आर्थिक नीति नहीं है, यह दक्षिण–पूर्वी एशिया के प्रति भारत के दृष्टिकोण और उभरती वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत के स्थान में एक रणनीतिक बदलाव की है। भारत–आसियान सम्बन्ध एक महत्वपूर्ण और बढ़ते हुए क्षेत्रीय साझेदारी है जो सुरक्षा, वाणिज्यिक सम्बन्ध, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और वित्तीय सहयोग के माध्यम से बढ़ते आदान–प्रदान को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखती है। यह अध्ययन भारत–आसियान सम्बन्धों को महत्वपूर्ण पहलुओं का मूल्यांकन करेगा और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डालेगा।

मूल शब्दः दक्षिण–पूर्वी एशिया, भारत, आसियान, सुरक्षा, व्यापार, शैक्षणिक गतिविधि, हिन्द–प्रशान्त, पर्यटन

आसियान का गठन 1967 में हुआ[1] इसके संस्थापक सदस्यों ने एक ऐसे संगठन की कल्पना की थी जिसमें दक्षिण–पूर्वी एशिया के सभी देश सम्मिलित होगें। आसियान शुरूआत में पाँच सदस्यीय था। वर्तमान में इसमें दस राष्ट्र शामिल है। आसियान के देश विविध है और विकास को अलग–अलग चरणों में है इसमें सिंगापुर विकास के मामले में सबसे आगे हैं और म्यांमार अभी सबसे कम विकसित है। आसियान के निर्माण का मुख्य उद्देश्य दक्षिण–पूर्वी एशिया में आर्थिक प्रगति को गति प्रदान करना और आर्थिक विकास की गति को स्थायित्व प्रदान करना। मोटे तौर पर इसके निर्माण का प्रमुख उद्देश्य सदस्य राष्ट्रों में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक, वैज्ञानिक, तकनीकि, प्रशासनिक आदि क्षेत्रों में परस्पर सहायता करना तथा सामूहिक सहयोग से विभिन्न साझी समस्याओं का हल ढूँढना है जो इसके निर्माण के समय आसियान घोषणा–पत्र में स्पष्ट रूप से लिखित है।

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद आसियान ने क्षेत्रीय सहयोग व विकास की दिशा में अभूतपूर्व प्रगति की है तथा यह आर्थिक सहयोग संगठन विश्व की उभरती हुयी आर्थिक शक्ति बन गया है। भारत ने भी आसियान के महत्व को देखते हुए 1991 में अपनी 'पूर्व की ओर देखों नीति' के अन्तर्गत गत तीन दशकों में आसियान देशों के साथ बहुआयामी साझेदारी को मजबूत करने का प्रयास किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

- दक्षिण पूर्वी एशिया में शांति व सुरक्षा की स्थापना हेतु भारत व आसियान सम्बन्धों की भूमिका का पता लगाना।
- चीन के वर्चस्ववादी नीतियों के कारण भारत के पूर्वोत्तर सीमान्त के खतरों तथा चुनौतियों का पता लगाना।
- भारत का दक्षिण पूर्वी एशिया तथा सम्पर्क बढ़ाने में आसियान के संभावनाओं का पता लगाना।
- भारत के आर्थिक हितों को पूरा करने में आसियान के योगदान का अध्ययन।
- एशिया महाद्वीप में भारत के पक्ष में शक्ति–संतुलन स्थापित करने हेतु आसियान की भूमिका का विश्लेषण।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक विधि तथा वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग हुआ है तथा शोध की प्रासंगिकता तथा गुणवत्ता के लिए प्राथमिक तथा द्वितीय डाटा का भी प्रयोग किया गया है। जिसमें डाटा एकत्रित करने के लिए केस स्टडी, बहुमुल्य व्यक्तित्व तथा शिक्षाविदों से वार्तालाप के माध्यम से डाटा का संकलन किया गया है तथा द्वितीय डाटा के संकलन के लिए पुस्तकों पत्रिकाओं और समाचार पत्रों, आर्टिकल्स, शोध–पत्र आदि की सहायता ली गई है।

भारत–आसियान वर्तमान स्थिति

भारत और दक्षिण–पूर्व एशिया के बीच के राजनीतिक–आर्थिक और सामाजिक–सांस्कृतिक सम्बन्ध ईसा पूर्व के दौर के हैं। व्यापारिक सम्पर्कों के प्रभुत्व वाला एक युग, हिन्दू और बौद्ध धर्मों को इस क्षेत्र में ले आया। आज के दक्षिण–पूर्व एशिया में भारतीय प्रभाव पर्याप्त रूप से दृष्टिगोचर होता है, विशेष तौर उनकी भाषा, रीति–रिवाजों एवं राजवंशियों के कर्मकाण्डों के मामलों में। इस तरह से देखा जाये तो भारत के दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ व्यापक सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक सम्बन्ध रहे हैं।[2] लेकिन स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में, इस क्षेत्र को विभिन्न कारणों से भारत द्वारा पूरी तरह से अनदेखा कर दिया गया।

स्वतंत्र भारत में दक्षिण–पूर्व एशिया के साथ सम्बन्धों की शुरूआत 1992 के तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के 'पूर्व की ओर देखों' नीति से मानी जाती है।[3] 1990 के दशक के शुरूआती वर्षों से प्रारम्भ हुए भारत–आसियान सम्बन्धों ने अनेक मील के पत्थर पर किये हैं।

व्यापार, संस्कृति, सम्पर्क और समुद्री सुरक्षा भारत–आसियान सम्बन्ध के चार सबसे मजबूत आधार स्तम्भ है। भौतिक, संस्थागत रूप मानसिक सम्पर्क भारत–आसियान साझेदारी का प्रमुख उद्देश्य रहा है। भारत ऐसी ट्रांस नेशनल परियोजनाओं को

बढ़ावा देने में सबसे आगे रहा है जो इस क्षेत्र को सड़क, रेल और समुद्री सम्पर्क मार्गों से जोड़ने की मंशा से शुरू की गई है। भारत, म्यामार, थाईलैण्ड त्रिपक्षीय अन्तर्राष्ट्रीय राजमार्ग पूरा होते ही यह इस क्षेत्र के साथ भारत के बहु–आयामी सम्बन्धों में नई गति पैदा होगी। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों, जो आसियान के प्रवेश द्वारा है के आर्थिक उत्थान को आगे बढ़ाने के नवीन उत्साह से भरी नई भारत सरकार के साथ यह संवर्धित कनेक्टीविटी इस क्षेत्र की नई समृद्धि का विश्वास दिलाती है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक में दक्षिण–पूर्वी एशिया का कई कारणों से बड़ा महत्व है। यह क्षेत्र सामरिक और भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। यह हिन्द महासागर को प्रशान्त महासागर से मिलाने वाले समुद्री मार्ग पर स्थित है और एशिया व आस्ट्रेलिया के मध्य तक प्राकृतिक पुल का कार्य करता है। आर्थिक दृष्टि से यह क्षेत्र बहुत समृद्ध है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की दृष्टि से इस क्षेत्र की विशिष्टता के कारण यहाँ प्रभुता पाने के लिए साम्यवादी चीन का प्रबल प्रयास तथा इसे रोकने के लिए पश्चिमी शक्तियों के प्रयत्न है।

अक्टूबर 2003 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की आसियान देशों की यात्रा के साथ ही भारत के आसियान के साथ सम्बन्ध एक नए मोड़ पर आ गये।[4] वस्तुतः वर्तमान में भारत–आसियान सम्बन्ध भारत की विदेशी नीति का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष बन गया है। लगभग तीन दशक पहले भारत ने पूर्वोन्मुखी नीति का अनुगमन किया था तब से निरन्तर आसियान के साथ भारत के सम्बन्धों में मजबूती आयी है। यह कहा जा सकता है कि प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के समय से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शासन काल में भारत की आसियान देशों के प्रति नीति में एक निरन्तरता रही है।

इसके आधार पर भारत–संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की उम्मीदवारी, राष्ट्रमण्डल, असैनिक परमाणु सहयोग इत्यादि जैसे मुद्दों पर भारत के लिए इस क्षेत्र के अधिकांश देशों का समर्थन प्राप्त करने में सफल रहा है। गत 30 वर्षों में भारत व आसियान देशों के साथ व्यापारिक, आर्थिक, सामारिक, विकास साझेदारी सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में व्यापक सहयोग को बढ़ाने में सफलता मिली है।[5] वर्तमान में भारत–आसियान के मध्य बढ़ती हुई बहुआयामी साझेदारी भारत की दक्षिण–पूर्व नीति की सफलता का द्योतक है।

▪ भविष्य की संभावनाएँ

भारत–आसियान सम्बन्धों का मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय सहयोग और व्यापार बढ़ाना है। इन सम्बन्धों के माध्यम से दोनों पक्षों को आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों में गहरी समर्पण के साथ मिलकर काम करने का अवसर मिलता है। इस संदर्भ में भारत और आसियान के बीच कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जहाँ सहयोग की संभावनाएँ है–

▪ व्यापार और वित्तीय सहयोग

भारत और आसियान के बीच व्यापार और वित्तीय सहयोग के अवसर हैं। दोनों पक्षों के बीच व्यापार में वृद्धि करने के लिए व्यापारिक समझौते, निवेश और वित्तीय सहायता के क्षेत्र में अधिक सहयोग का विकास हो सकता है।

▪ कौशल विकास

भारत व आसियान देशों के बीच कौशल विकास के क्षेत्र में सहयोग की संभावनाएँ हैं। यह सहयोग टेक्नोलॉजी, शिक्षा, प्रशिक्षण और व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से हो सकता है, जिसमें युवा पीढ़ी को उच्च कौशल विकास में मदद मिल सके।

▪ सांस्कृतिक एवं जानकारीगत विनियम

भारत और आसियान देशों के पास समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत है। इसलिए दोनों पक्षों के बीच सांस्कृतिक एवं ज्ञान विनियम के अवसर मौजूद है। कला, संगीत, डांस, फिल्म आदि क्षेत्रों में आपसी समझौता और आदान–प्रदान के माध्यम से दोनों देशों के बीच भारतीय और आसियान सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा मिल सकता है।

▪ सुरक्षा सहयोग

रक्षा और सुरक्षा भारत और आसियान क बीच भविष्य के सहयोग का एक प्रमुख क्षेत्र है। अब दक्षिण एशिया और दक्षिण–पूर्वी एशिया की सुरक्षा अलग नहीं है। आपसी मित्रता को मजबूत करके, आतंकवाद, साइबर अपराध और अन्य अपारदर्शी गतिविधियों के खिलाफ मिलकर लड़ने के लिए साझा विचार–विमर्श और सहयोगी कार्यवाही बढ़ाई जा सकती है।

▪ पर्यटन

भारत और आसियान देशों के बीच पर्यटन के क्षेत्र में बढ़ती संभावनाए हैं। दोनों पक्षों के बीच पर्यटनीय संसाधनों का साझा उपयोग करने, पर्यटनों के आकर्षण को बढ़ाने और पर्यटन सेक्टर में एकजुटता को बढ़ाने के लिए सहयोग की संभावनाएँ हैं।

इस संभावनाओं को समझकर भारत व आसियान के बीच सम्बन्धों को मजबूत करने के लिए उचित मार्गदर्शन, सहयोग और संयोजन की आवश्यकता होती है। इसके माध्यम से दोनों पक्षों के लोगों को लाभ मिल सकता है और एक विश्वासपूर्ण और प्रगतिशील सम्बन्ध विकसित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

भारत–आसियान देशों के सम्बन्ध हजारों वर्ष पुराने हैं। चूँकि भारत और आसियान देशों के बीच द्विपक्षीय सम्बन्धों में कोई बुनियादी संघर्ष नहीं है और क्षेत्रीय रणनीतिक पर्यावरण रक्षा सहयोग की उनकी साझा धाराओं को देखते हुए भारत और आसियान देशों दोनों के लिए 21वीं सदी में अपने सम्बन्धों को और मजबूत करने के लिए नए अवसर प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. पंत, डॉ0 पुष्पेश, जैन, श्री पाल, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध सिद्धान्त और व्यवहार, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2019, पृ0–540।
2. वही, पृ0–155
3. दत्त, वी0पी0, बदलती दुनियां में भारत की विदेशी नीति, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2015, पृ0–125
4. विश्वाल, तपन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, मैकमिलन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ0–109
5. दत्त, वी0पी0, स्वतंत्र भारत की विदेशी नीति, नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली, 2014 पृ0–393